चत्वारो वेदाः

!!!---: ऋग्वेद का सामान्य परिचय :---!!!

=========================

(१) ऋग्वेद की शाखा :----

===================

महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की २१ शाखाएँ हैं, किन्तु पाँच ही शाखाओं के नाम उपलब्ध होते हैं :---

(१) शाकल

(२) बाष्कल

(३) आश्वलायन

(४) शांखायन

(५) माण्डूकायन

संप्रति केवल शाकल शाखा ही उपलब्ध है !

ऋग्वेद के ब्राह्मण

=============

(१) ऐतरेय ब्राह्मण

(२) शांखायन ब्राह्मण

ऋग्वेद के आरण्यक

===============

(१) ऐतरेय आरण्यक

(२) शांखायन आरण्यक

ऋग्वेद के उपनिषद

===============

(१) ऐतरेय उपनिषद्

(२) कौषीतकि उपनिषद्

ऋग्वेद के देवता

============

तिस्र एव देवताः इति नैरुक्ताः !

(१) अग्नि (पृथिवी स्थानीय)

(२) इन्द्र या वायु (अन्तरिक्ष स्थानीय)

(३) सूर्य (द्यु स्थानीय)

ऋग्वेद में बहु प्रयोग छंद

================

(१) गायत्री ,

(२) उष्णिक्

(३) अनुष्टुप् ,

(४) त्रिष्टुप्

(५) बृहती,

(६) जगती,

(७) पंक्ति,

ऋग्वेद के मंत्रों के तीन विभाग

===================

(१) प्रत्यक्षकृत मन्त्र

(२) परोक्षकृत मन्त्र

(३) आध्यात्मिक मन्त्र

ऋग्वेद का विभाजन

==============

(१) अष्टक क्रम :----

८ अष्टक

६४ अध्याय

२००६ वर्ग

(२) मण्डलक्रम :---

१० मण्डल

८५ अनुवाक

१०२८ सूक्त

१०५८०---१/४

!!!---: यजुर्वेद का सामान्य परिचय :--!!!

=========================

यजुर्वेद यज्ञ कर्म के लिए उपयोगी ग्रन्थ है । गद्यात्मक भाग के "यजुः" कहा जाता है । यजुस् की प्रधानता के कारण इसे " यजुर्वेद" कहा जाता है ।

यजुष् के अन्य अर्थः---

(१.) यजुर्यजतेः (निरुक्त--७.१२)

(यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं ।)

(२.) इज्यते अनेनेति यजुः ।

(जिन मन्त्रों से यज्ञ किया जाता हैं, उन्हें यजुष् कहते हैं ।)

(३.) अनियताक्षरावसानो यजुः ।

(जिन मन्त्रों में पद्यों के तुल्य अक्षर-संख्या निर्धारित नहीं होती है, वे यजुष् हैं ।)

(४.) शेषे यजुःशब्दः । (पूर्वमीमांसा--२.१.३७)

(पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं ।)

(५.) एकप्रयोजनं साकांक्षं पदजातमेकं यजुः ।

(एक उद्देश्य से कहे हुए साकांक्ष एक पद-समूह को यजुः कहेंगे ।)

इस वेद की दो परम्पराएँ हैं :--- कृष्ण और शुक्ल ।

शुक्ल यजुर्वेद में शुद्ध रूप में मन्त्र मात्र संकलित है, किन्तु कृष्ण यजुर्वेद में मन्त्रों के साथ ब्राह्मण मिश्रित है ।

शाखाएँ :---

=======

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की १०१ शाखाएँ बताई है, किन्तु उपलब्धता कम है ।

(१) शुक्ल यजुर्वेद :---

=============

इसकी कुल १६ शाखाएँ बताईं जाती हैं , किन्तु सम्प्रति २ ही शाखाएँ उपलब्ध हैं---

(१.) माध्यन्दिन (वाजसनेयी) शाखा,

(२.) काण्व शाखा ।

माध्यन्दिन-शाखा के मुख्य ऋषि याज्ञवल्क्य हैं । ये मिथिला के निवासी थे । इनके पिता वाजसनि थे, अतः याज्ञवल्क्य वाजसनेय कहलाए । उनके नाम पर इस यजुर्वेद को वाजसनेयी शाखा भी कहते हैं ।

याज्ञवल्क्य ऋषि ने आदित्य ऋषि से इसे दिन के मध्य भाग में प्राप्त किया था, अतः इसे माध्यन्दिन शाखा कहा गया । इस शाखा का सर्वाधिक प्रचार उत्तर भारत में है ।

काण्व ऋषि के पिता बोधायन थे । काण्व के गुरु याज्ञवल्क्य ही थे । काण्व-शाखा का सर्वाधिक प्रचार महाराष्ट्र में हैं ।

(२) कृष्ण यजुर्वेद :----

============

इसकी कुल ८५ शाखाएँ बताईं जाती हैं किन्तु सम्प्रति ४ शाखाएँ ही उपलब्ध हैं---

(१.) तैत्तिरीय-संहिता,

(२.) मैत्रायणी -संहिता,

(३.) कठ-संहिता,

(४.) कपिष्ठल-संहिता,

शुक्ल और कृष्ण यजुर्वेद में अन्तर :---

====================

(१.) शुक्लयजुर्वेद

===========

(१.) यह आदित्य सम्प्रदाय का प्रतिनिधि ग्रन्थ है ।

(२.) इसमें यज्ञ में प्रयोग किए जाने वाले मन्त्र है ।

(३.) यह विशुद्ध है, अर्थात् केवल मन्त्र है, कोई मिश्रण नहीं है ।

(४.) इस ग्रन्थ की प्राप्ति आदित्य से हुई है । आदित्य शुक्ल होता है, अतः इसका नाम शुक्ल-यदुर्वेद रखा गया । शुद्धता के कारण भी इसे शुक्ल कहा गया है ।

(५.) इसमें व्याख्या, विवरण और विनियोगात्मक भाग नहीं है, अर्थात् विशुद्ध है ।

(२.) कृष्णयजुर्वेद

==========

(१.) यह ब्रह्म-सम्प्रदाय का प्रतिनिधि ग्रन्थ है ।

(२.) इसमें मन्त्रों के साथ-साथ ब्राह्मण भी मिश्रित है, अतः मिश्रण के कारण कृष्ण कहा गया ।

(३.) आदित्य के प्रकाश के विपरीत होने से भी इसे कृष्ण कहा गया ।

(४.) यह अव्यवस्थित है ।

(५.) इसमें व्याख्या, विवरण और विनियोगात्मक भाग है, अर्थात् विशुद्ध नहीं है, अस्वच्छ है, मिश्रित है ।

मन्त्र :---

=====

(१.) शुक्लयजुर्वेदः---

=============

शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी-शाखा में कुल---

४० अध्याय हैं,

१९७५ मन्त्र हैं ।

वाजयनेयी संहिता में कुल अक्षर २,८८,००० (दो लाख, अट्ठासी हजार) हैं ।

काण्व-शाखा में भी ४० ही अध्याय हैं, किन्तु मन्त्र २०८६ हैं ।

अनुवाक---३२८ हैं ।

(२.) कृष्णयजुर्वेदः--

==========

तैत्तिरीय-शाखा में कुल ७ काण्ड हैं,

४४ प्रपाठक हैं,

६३१ अनुवाक हैं ।

मैत्रायणी-शाखा में कुल ४ काण्ड हैं,

५४ प्रपाठक हैं,

३१४४ मन्त्र हैं ।

काठक (कठ) संहिता में कुल ५ खण्ड हैं,

स्थानक ४० हैं,

वचन १३ हैं,

५३ उपखण्ड हैं,

८४३ अनुवाक हैं,

३०२८ मन्त्र हैं ।

कपिष्ठल अपूर्ण रूप में उपलब्ध है ।

इसमें ६ अष्टक ही उपलब्ध है ,

४८ अध्याय पर समाप्ति है ।

ब्राह्मण :---

=========

शुक्लयजुर्वेद ------ शतपथ ब्राह्मण

कृष्णयजुर्वेद ---- तैत्तिरीय ब्राह्मण , मैत्रायणी, कठ और कपिष्ठल

इन चारों संहिताओं में जो ब्राह्मण भाग हैं, वही कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण है ।

आरण्यक :---

==========

शुक्लयजुर्वेद---- बृहदारण्यक

कृष्णयजुर्वेद---- तैत्तिरीय आरण्यक

उपनिषद् :---

========

शुक्लयजुर्वेद ---- ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्।

कृष्णयजुर्वेद---- तैत्तिरीय उपनिषद्, महानारायण, मैत्रायणीय, कठोपनिषद्, श्वेताश्वरोपनिषद्।

श्रौतसूत्र :---

=========

शुक्लयजुर्वेद---कात्यायन (पारस्कर)

कृष्णयजुर्वेद----आपस्तम्ब, बोधायन, हिरण्यकेशी (सत्याषाढ), भारद्वाज, वैखानस, वाधुल, मानव, मैत्रायणी, वाराह ।

गृह्यसूत्र :---

=======

शुक्लयजुर्वेद---कात्यायन (पारस्कर)

कृष्णयजुर्वेद----आपस्तम्ब, बोधायन, सत्याषाढ, वैखानस, कठ ।

धर्मसूत्र :---

========

शुक्लयजुर्वेद---कोई नहीं ।

कृष्णयजुर्वेद----वसिष्ठ-सूत्र ।

शुल्वसूत्र :---

=============

शुक्लयजुर्वेद---कात्यायन ।

कृष्णयजुर्वेद---बोधायन, आपस्तम्ब, मानव, मैत्रायणी, वाराह और वाधुल ।

!!!---: सामवेद : सामान्य परिचय :---!!!

==========================

वैदिक वाङ्मय में सामवेद का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । गीता (१०.२२) में श्रीकृष्ण ने स्वयं के लिए सामवेद कहा है---" वेदानां सामवेदोऽस्मि ।"

इस वेद का महत्त्व इस बात से अधिक है कि सामवेद को द्यु कहा गया है, जबकि ऋग्वेद को पृथिवी कहा है---"साम वा असौ द्युलोकः, ऋगयम् भूलोकः ।" (ताण्ड्य-ब्राह्मण--४.३.५)

सामवेद वेदों का सार है । सारे वेदों का रस या सार सामवेद ही है ---"सर्वेषामं वा एष वेदानां रसो यत् साम ।" (शतपथ---१२.८.३.२३) (गोपथ-ब्राह्मण--२.५.७)

सामवेद के लिए गीतियुक्त होना अनिवार्य है---"गीतिषु सामाख्या ।" (पूर्वमीमांसा--२.१.३६)

ऋग्वेद और सामवेद का अभिन्न सम्बन्ध हैं ।

सामवेद के बिना यज्ञ नहीं होता---"नासामा यज्ञो भवति ।" (शतपथ--१.४.१.१)

जो पुरुष "साम" को जानता है, वही वेद के रहस्य को जान पाता है---"सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम् ।" (बृहद्देवता)

"साम" का शाब्दिक अर्थ है---देवों को प्रसन्न करने वाला गान ।

सामवेद का प्रकाश आदित्य ऋषि के हृदय में हुआ ।

आचार्य सायण के अनुसार ऋग्वेद के गाए जाने वाले मन्त्रों को "साम" कहते हैं---"ऋच्यध्यूढं साम ।" अर्थात् ऋचाओं पर ही साम आश्रित है ।

सामवेद उपासना का वेद है ।

(१.) सामवेद के प्रमुख ऋषि---आदित्य,

सामवेद सूर्य है और सामवेद के मन्त्र सूर्य की किरणें हैं---"(आदित्यस्य) अर्चिः सामानि ।" (शतपथ--१०.५.१.५)

(२.) सामवेद के गायक ऋत्विज्---उद्गाता,

(३.) सामवेद के देवता---आदित्य ।

सामवेद की उत्पत्ति सूर्य से हुई है । यह सूर्य-पुत्र है । इसमें सूर्य की शक्ति है---"सूर्यात् सामवेदः अजायत ।" (शतपथ---११.५.८.३)

(४.) ऋषि व्यास ने सामवेद का अध्ययन कराया---जैमिनि को ।

जैमिनि ने सामवेद की शिक्षा अपने पुत्र सुमन्तु को, सुमन्तु ने सुन्वान् को और सुन्वान् ने अपने पुत्र सुकर्मा को दी ।

सामवेद का विस्तार इसी सुकर्मा ऋषि ने की थी । सुकर्मा के दो शिष्य थे---हिरण्यनाभ कौशल्य औ पौष्यञ्जि ।

हिरण्यनाभ का शिष्य कृत था । कृत ने सामवेद के २४ प्रकार के गान स्वरों का प्रवर्तन किया था ।

कृत के बहुत से आनुयायी हुए । इनके अनुयायी सामवेदी आचार्यों को "कार्त" कहा जाता है----

"चतुर्विंशतिधा येन प्रोक्ता वै सामसंहिताः ।

स्मृतास्ते प्राच्यसामानः कार्ता नामेह सामगाः ।" (मत्स्यपुराणः---४९.६७)

(५.) शाखाएँ---

ऋषि पतञ्जलि के अनुसार सामवेद की १००० हजार शाखाएँ थीं---"सहस्रवर्त्मा सामवेदः" (महाभाष्य) ।

सम्प्रति इसकी तीन ही शाखाएँ समुपलब्ध है---

(क) कौथुम,

(ख) राणायणीय,

(ग) जैमिनीय,

कौथुम शाखा के अनुसार सामवेद के दो भाग हैं---(क) पूर्वार्चिक , (२.) उत्तरार्चिक ।

(क) पूर्वार्चिकः----

इसमें कुल चार काण्ड हैं---(क) आग्नेय, (ख) ऐन्द्र, (ग) पावमान (घ) आरण्य-काण्ड ।

परिशिष्ट के रूप में १० मन्त्र महानाम्नी आर्चिक हैं ।

पूर्वार्चिक में ६ प्रपाठक हैं । कुल मन्त्र ६५० हैं ।

प्रपाठकों में अध्याय है, अध्यायों में खण्ड हैं , जिन्हें "दशति" कहा जाता है, खण्डों में मन्त्र हैं ।

इसके प्रपाठकों के विभिन्न नाम हैं । जिसमें जिस देवता की प्रधानता है, उसका वही नाम है । जैसे---

(क) प्रथम प्रपाठक का नाम--"आग्नेय-पर्व" हैं, क्योंकि इसमें अग्नि से सम्बद्ध मन्त्र हैं । इसके देवता अग्नि ही है । इसमें कुल ११४ मन्त्र हैं ।

(ख) द्वितीय से चतुर्थ प्रपाठक का नाम---"ऐन्द्र-पर्व" है, क्योंकि इनमें इन्द्र की स्तुतियाँ की गईं हैं । इसके देवता इन्द्र ही है । इसमें ३५२ मन्त्र हैं ।

(ग) पञ्चम प्रपाठक का नाम ----"पवमान-पर्व" है, क्योंकि इसमें सोम की स्तुति की गई है । इसके देवता सोम ही है । इसमें कुल ११९ मन्त्र हैं ।

(घ) षष्ठ प्रपाठक का नाम---"अरण्यपर्व" है, क्योंकि इसमें अरण्यगान के ही मन्त्र है । इसके देवता इन्द्र, अग्नि और सोम हैं । इसमें कुल ५५ मन्त्र हैं ।

(ङ) महानाम्नी आर्चिक---यह परिशिष्ट हैं । इसके देवता इन्द्र हैं । इसमें कुल १० मन्त्र हैं ।

इस प्रकार कुल मिलाकर पूर्वार्चिक में ६५० मन्त्र हुए ।

इसका अभिप्राय यह है कि प्रथम से पञ्चम प्रपाठक तक के मन्त्रों का गान गाँवों में हो सकता है । इसलिए इन्हें "ग्रामगान" कहते हैं ।

सामगान के चार प्रकार होते हैं---

(क) ग्रामगेय गान--इसे "प्रकृतिगान" और "वेयगान" भी कहते हैं । यह ग्राम या सार्वजनिक स्थानों पर गाया जाता था ।

(ख) आरण्यगान या आरण्यक गेयगान---यह वनों या पवित्र स्थानों पर गाया जाता था । इसे "रहस्यगान" भी कहते हैं ।

(ग) उहगान---"ऊह" का अर्थ है---विचारपूर्वक विन्यास । यह सोमयाग या विशेष धार्मिक अवसरों पर गाया जाता था ।

(घ) उह्यगान या रहस्यगान---रहस्यात्मक होने के कारण यह सार्वजनिक स्थानों पर नहीं गाया जाता था ।

(ख) उत्तरार्चिक----

इसमें कुल २१ अध्याय और ९ प्रपाठक हैं । कुल मन्त्र १२२५ हैं । इसमें कुल ४०० सूक्त हैं ।

पूर्वार्चिक में ऋचाओं का छन्द देवताओं के अनुसार है, जबकि उत्तरार्चिक में यज्ञों के अनुसार है ।

पूर्वार्चिक में ६५० मन्त्र है, जबकि उत्तार्चिक में १२२५ मन्त्र हैं । दोनों मिलाकर १८७५ हुए ।

पूर्वार्चिक के २६७ मन्त्रों की आवृत्ति उत्तरार्चिक में हुई है । १५०४ मन्त्र ऋग्वेद से आगत है ।

साममवेदस्थ सामगान मन्त्रों के ५ भाग हैं----

(क) प्रस्ताव---इसका गान "प्रस्तोता" नामक ऋत्विक् करता है । यह "हूँ ओग्नाइ" से प्रारम्भ होता है ।

(ख) उद्गीथ---इसे साम का प्रधान ऋत्विक् उद्गाता गाता है । यह "ओम्" से प्रारम्भ होता है ।

(ग) प्रतिहार----इसका गान "प्रतिहर्ता" नामक ऋत्विक् करता है । यह दो मन्त्रों को जोडने वाली कडी है । अन्त में "ओम्" बोला जाता है ।

(घ) उपद्रव----इसका गान उद्गाता ही करता है ।

(ङ) निधन----इसका गान तीनों ऋत्विक करते हैं---प्रस्तोता, उद्गाता और प्रतिहर्ता ।

(६.) सामवेद के कुल मन्त्र----१८७५ हैं ।

ऋग्वेद से आगत मन्त्र हैं--१७७१

सामवेद के अपने मन्त्र हैं--१०४ = १८७५

ऋग्वेद से संकलित १७७१ मन्त्रों में से भी २६७ मन्त्र पुनरुक्त हैं ।

सामवेद के अपने १०४ मन्त्रों में से भी ५ मन्त्र पुनरुक्त हैं ।

इस प्रकार पुनरुक्त मन्त्रों की संख्या २७२ है ।

सारांशतः---

सामवेद में ऋग्वेदीय मन्त्र १५०४ + पुनरुक्त २६७ कुल हुए= १७७१

सामवेद के अपने मन्त्र--९९ + पुनरुक्त ५, इस प्रकार कुल हुए= १०४

दोनों को मिलाकर कुल मन्त्र हुए--- १७७१ + १०४ = १८७५

सामवेद में ऋग्वेद से लिए गए अधिकांश मन्त्र ऋग्वेद के ८ वें और ९ वें मण्डल के हैं ।

८ वें मण्डल से ४५० मन्त्र लिए गए हैं,

९ वें मण्डल से ६४५ मन्त्र लिए गए हैं ।

१ वें मण्डल से २३७ मन्त्र लिए गए हैं ।

१० वें मण्डल से ११० मन्त्र लिए गए हैं ।

सामवेद में कुल अक्षर ४००० * ३६ = १,४४,००० (एक लाख, चौवालीस हजार(हैं ।

सामवेद के ४५० मन्त्रों का गान नहीं हो सकता , अर्थात् ये गेय नहीं है ।

कौथुम शाखा में कुल मन्त्र १८७५ हैं, जबकि जैमिनीय शाखा में १६८७ मन्त्र ही है ।

इस प्रकार जैमिनीय-शाखा में १८८ मन्त्र कम है ।

जैमिनीय शाखा में गानों के ३६८१ प्रकार हैं, जबकि कौथुमीय में केवल २७२२ ही हैं , अर्थात् जैमिनीय-शाखा में ९५९ गान-प्रकार अधिक हैं ।

जैमिनीय-शाखा की संहिता, ब्राह्मण, श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र सभी उपलब्ध हैं, किन्तु कौथुमीय के नहीं ।

ब्राह्मणः--

पञ्चविंश (ताण्ड्य) महाब्राह्मण , षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय, वंश, जैमिनीय, तलवकार ।

आरण्यक कोई नहीं ।

उपनिषद्---छान्दोग्य, केनोपनिषद् ।

श्रौतसूत्र---खादिर, लाट्यायन, द्राह्यायण ।

गृह्यसूत्र----खादिर, गोभिल, गौतम ।

धर्मसूत्र---गौतम ।

शुल्वसूत्र कोई नहीं ।

सामवेद से तीन प्रमुख शिक्षाएँ मिलती हैं---

(क) समत्व की भावना जागृत करना ।

(ख) समन्वय की भावना । पति-पत्नी को एकत्रित करना। समाज को एकत्रित करना । सबको मिलाना । किसी को अलग नहीं करना ।

(ग) साम प्राण है । जीवन में प्राणशक्ति का बडा महत्त्व है । प्राणी इसी से जीता है ।

!!!---: अथर्ववेद एक सामान्य परिचय :---!!!

==========================

अथर्ववेद का अर्थ--अथर्वों का वेद,

वेदों में अन्यतम अथर्ववेद एक महती विशिष्टता से युक्त है ।

अथर्ववेद का अर्थ---अथर्वों का वेद (ज्ञान), और अङ्गिरों का ज्ञान अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान ।

(१.) अथर्वन्--- स्थिरता से युक्त योग । निरुक्त (११.१८) के अनुसार "थर्व" धातु से यह शब्द बना है, जिसका अर्थ है---गति या चेष्टा । अतः "अथर्वन्" शब्द का अर्थ है--स्थिरता । इसका अभिप्राय है कि जिस वेद में स्थिरता या चित्तवृत्तियों के निरोधरूपी योग का उपदेश है, वह अथर्वन् वेद है---"अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः । थर्वतिश्चरतिकर्मा, तत्प्रतिषेधः ।" निरुक्त (११.१८)

(२.) गोपथ-ब्राह्मण के अनुसार---समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना या वेद वह जिसमें आत्मा को अपने अन्दर देखने की विद्या का उपदेश हो ।

प्राचीन काल में अथर्वन् शब्द पुरोहितों का द्योतक था ।

अन्य नाम

=======

अथर्वाङ्गिरस्,

आङ्गिरसवेद,

ब्रह्मवेद,

भृग्वाङ्गिरोवेद,

क्षत्रवेद,

भैषज्य वेद,

छन्दो वेद,

महीवेद

मुख्य ऋषि---अङ्गिरा,

ऋत्विक्---ब्रह्मा

प्रजापति ब्रह्म ने इस वेद का ज्ञान सर्वप्रथम अङ्गिरा ऋषि को दिया ।

शाखाएँ

=====

ऋषि पतञ्जलि ने महाभाष्य में इस वेद की ९ शाखाएँ बताईं हैं, जिनके नाम इस प्रकार है---

(१.) पैप्लाद,

(२.) तौद,(स्तौद)

(३.) मौद,

(४.) शौनकीय,

(५.) जाजल,

(६.) जलद,

(७.) ब्रह्मवद,

(८.) देवदर्श,

(९.) चारणवैद्य ।

इनमें से सम्प्रति केवल २ शाखाएँ ही उपलब्ध है:--शौनकीय और पैप्लाद । शेष मुस्लिम आक्रान्ताओं न नष्ट कर दी । आजकल सम्पूर्ण भारत वर्ष में शौनकीय-शाखा ही प्रचलित है और यही अथर्ववेद है ।

(१.) शौनकीय-शाखा

===========

काण्ड---२०,

सूक्त---७३०,

मन्त्र---५९८७,

(२.) पैप्लाद -शाखा---

यह अपूर्ण है । इसका प्रचलन पतञ्जलि के समय था ।

उपवेद---अर्थर्वेद

=========

गोपथ-ब्राह्मण (१.१.१०) में इसके पाँच उपवेदों का वर्णन हुआ है---

सर्पवेद,

पिशाचवेद,

असुरवेद,

इतिहासवेद,

पुराणवेद ।

शतपथ-ब्राह्मण (१३.४.३.९) में भी इन उपवेदों का नाम आया है---

सर्पविद्यावेद,

देवजनविद्यावेद, (रक्षोवेद या राक्षसवेद),

मायावेद (असुरवेद या जादुविद्यावेद),

इतिहासवेद ,

पुराणवेद

ऋषि व्यास ने इसका ज्ञान सुमन्तु को दिया

ब्राह्मण---गोपथ-ब्राह्मण

आरण्यक---कोई नहीं

उपनिषद्---मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्

श्रौतसूत्र---वैतान

===========

गृह्यसूत्र---कौशिक,

========

धर्मसूत्र---कोई नहीं ।

शुल्वसूत्र---कोई नहीं ।

अथर्वा ऋषि महान् वैज्ञानिक थे । उन्होंने इस धरा-धाम पर सर्वप्रथम अग्नि का आविष्कार किया था । उन्होंने अरणि-मन्थन से अग्नि का और जल-मन्थन से जलीय-विद्युत् का आविष्कार किया था---

(१.) "अग्निर्जातो अथर्वणा" (ऋग्वेदः---१०.२१.५)

(२.) "अथर्वा त्व प्रथमो निरमन्थदग्ने ।" (यजुर्वेद--११.३२)

(३.) अथर्वा ऋषि ने ही उत्खनन के द्वारा पुरीष्य अग्नि (प्राकृतिक गैस अर्थात् Oil and Natural Gas) का आविष्कार किया था--"पुरीष्योSसि विश्वभरा अथर्वा त्वा प्रथमो निरमन्थदग्ने ।" (यजुर्वेद---११.३२)

(4.) आज हम जिस अग्नि के द्वारा यज्ञ करते है, उस अग्नि में सर्वप्रथम अथर्वा ने यज्ञ किया था---"यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ।" (ऋग्वेदः---१.८३.५) अथर्वा ऋषि अध्यात्मवाद के प्रथम प्रचारक थे ।

अथर्वा ऋषि का दृष्टिकोण व्यापक था । उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य किया था ।

अथर्ववेद के सूक्त

===========

(१.) पृथिवी-सूक्त , अन्य नाम---भूमि-सूक्त (१२.१) कुल ६३ मन्त्र ।

(२.) ब्रह्मचर्य-सूक्त---(११.५) कुल २६ मन्त्र ।

(३.) काल-सूक्त --दो सूक्त हैं---११.५३ और ११.५४, कुल मन्त्र १५

(४.) विवाह-सूक्त---पूरा १४ वाँ काण्ड । इसमें २ सूक्त और १३९ मन्त्र हैं ।

(५.) व्रात्य-सूक्त--- १५ काण्ड के १ से १८ तक के सूक्तों में २३० मन्त्र है, ये सभी व्रात्य सूक्त हैं ।

(६.) मधुविद्या-सूक्त---९ वें काण्ड के सूक्त १ के २४ मन्त्रों में यह सूक्त है ।

(७.) ब्रह्मविद्या-सूक्त---अथर्ववेद के अनेक सूक्तों में ब्रह्मविद्या का विस्तृत वर्णन है ।

वैदिक सभ्यता और संस्कृति के विस्तृत ज्ञान के लिए अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे अधिक उपयोगी है ।

अथर्ववेद सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का सबसे सुन्दर चित्रण करता है ।

अथर्ववेद एक प्रकार का विश्वकोश है ।

यह सार्वजनीन वेद है । इसमें सभी वर्णों और सभी आश्रमों का विस्तृत वर्णन है ।

यही एक वेद है जो एक साथ लौकिक और पारलौकिक दोनों क्षेत्रों का वर्णन करता है ।